सम्पूर्णता वर्ष

तीव्र पुरुषार्थी सप्ताह – 2

06.04.2014

1. **स्वमान** – मैं तीव्र पुरुषार्थी हूँ।

- जब वक्त कम हो और मंजिल दूर तो एक समझदार व्यक्ति अपनी गति बढ़ा देता है ताकि समय रहते वह अपनी मंजिल पर पहुँच जाए। इसके विपरित यदि व्यक्ति लापरवाह बना रहे, आलसी और अलबेला बना रहे, अपने चिरपरिचित मंथर गति से ही चलता रहे तो पश्चाताप के सिवाए और कुछ हासिल नहीं होगा।

2. **योगाभ्यास** –

अ. सारे कल्प तो हम साकार लोक में ही रहे हैं और आगे भी रहेंगे...अब हम ऊपर रहें सूक्ष्म वतन में और मूलवतन में...सूक्ष्मवतन में अपनी ब्रह्मा माँ के साथ बातें करें, सैर करें, खेलें और उनसे सम्पन्न-सम्पूर्ण फरिश्ता बनने के टिप्स लें... इसी प्रकार मूलवतन में अपने प्राणेश्वर पिता के साथ अपने अनादि स्वरुप का अनुभव करें, स्वयं को सर्व गुणों, शक्तियों व वरदानों से भरपूर करें...इन दोनों लोकों में रहने से अर्थात् ऊपर रहने से पुरुषार्थ का ग्राफ भी ऊपर जाएगा, तीव्र होगा...।

ब. पुरुषार्थी शब्द के अर्थ स्वरुप में स्थित हों...मैं आत्मा पुरुष इस देह रुपी रथ पर विराजमान हूँ...मैं इस रथ का मालिक हूँ, यह रथ मेरा मालिक नहीं है...मैं जहाँ चाहूँ, जैसे चाहूँ, इस रथ को चलाऊँ...रथ मुझे नहीं, लेकिन मैं रथ का चलाने वाला हूँ...मन-बुद्धि रुपी लगाम मेरे हाथ में है...मैं सूक्ष्म और स्थूल कर्मेन्द्रियों से सजे इस शरीर रुपी रथ का राजा हूँ...मैं श्रेष्ठ पुरुषार्थी-तीव्र पुरुषार्थी हूँ...।

3. **धारणा – व्रत से वृत्ति परिवर्तन**

- जैसे भक्तिमार्ग में हम अन्न और जल का व्रत रखते थे और चाहे कितनी भी भूख वा प्यास क्यों ना लगे, हम अन्न और जल को छूते भी नहीं थे क्योंकि व्रत रखा हुआ होता था। मन में रहता था कि यदि अन्न-जल को छुवेंगे तो व्रत भंग हो जाएगा और हमारी मनोकामना पूरी नहीं होगी। वैसे ही अब व्यर्थ संकल्पों और अपनी कमी-कमजोरियों से दूर रहने का व्रत लें तभी वृत्ति परिवर्तित होगी और पुरुषार्थ में तीव्रता आएगी।

4. **चिंतन** –

- तीव्र पुरुषार्थ अर्थात् क्या ?
- ढ़ीले पुरुषार्थी, पुरुषार्थी और तीव्र पुरुषार्थी किसे कहेंगे ? तीनों में अंतर ? ?

5. **तपस्वियों प्रति** – प्रिय तपस्वियों! सीजन की आखिरी मुरली में बाबा ने जिस एक बात के लिए हमें बारंबार प्रेरित किया, वो है - **तीव्र पुरुषार्थ**। बाबा ने कभी कहा है - `किसी भी आत्मा को कोई सहयोग चाहिए वह दिल से सहयोग दे तीव्र पुरुषार्थी बनाते चलो। हर बच्चा तीव्र पुरुषार्थी हो । नंबरवार नहीं, तीव्र पुरुषार्थी। कम से कम अपने सम्पर्क में रहने वाले, आने वाले हर स्थान तीव्र पुरुषार्थी स्थान हो। यही संकल्प हर एक रखे और फिर **बापदादा इसकी रिजल्ट देखेंगे**।`तो तीव्र पुरुषार्थ को अंडरलाइन करें।